६६५

No. क

Title दान लीला

Author

Extent १८ पत्र Age

Subject काव्य (हिन्दी)

११०

हा नजोवितलावही ॥ कोटीपत्र
१० फलपावही ॥ विलंलोकोम
पावही ॥ इतिश्रीदानलीलासं
पूर्णम ॥

विनतीसबकोइहा ॥ छंद ॥ कल
चेटावजाईश्रावतीचेरनवंद
नसबकोरै ॥ कसदामप्रसाद
पावैजनमजनमकोदुखहरै
जोतेरगावैदानलीला । सन

हा

१८ 16

गोरी॥कीन्हीतनरतनमयपुवा

नी॥राम्रमंडुलकरतनबघानी॥

प्रभ्रूमरतनचंदावजावै॥धुनी

श्रावतीमंगलगावै॥सवगो

पीनकेहावदीह्वा॥हरिसो·

वै। नहाराधापानधीग्रावै॥ को
ईमोयिचवडोलावै॥ कोईता
लमृदंगवजावै॥ कोईहंसस
रोवरपावै॥ नेहीमाहीकोसि
रकोसेवी॥ दोउकृमलराधीका

रा. गप्रमंदलछमनदाता॥ सवरवा
१५ लतीकेमनमाना॥ हमसोह
15 नसंगामीलावै॥ मनुमानीक
जोतिवरावै॥ कोनसंगायथपले
आवै॥ तैवैदकीज्ञगातीवना

ईश्रापतोजन्मजन्मेगाकी
रहसीहीलीमीलोंमेगामोद
न॥ दीपमालीकमतीवंद॥ के
सराधौजयवालनीकेंज
वनक्रीडाकरी॥ चौपाई॥ तहा

ह्ल.

१४.

नम्रपतीकरीलीजे॥ईश्वावाती
पतीश्रधीश्रावी॥जतोछाडीप
राहमवारी॥छंद॥जतमहमा·
रोमफलकीजैदैहरीकेवर
ननपती॥कुलकीलाजगमा

हमारा॥हमनाथतुमारीदासी
तुमप्राननाथअविनासी॥अ
भकीचरननसुकलाणी॥हृ
महोपभुपरमअभागो॥अव
चरनसरनप्रभुदीजे॥ननम

दा
सु
13

कोउ काउ के संग नाहीं ॥ अंत दे-
खे वेचारके ॥ चौपाई ॥ नव ग्वाले
सबै मन माना ॥ श्री गजीवन के
जग जाना ॥ श्री गजीवन कुल-
परीवारा ॥ तम ही प्रभु नाथ-

८॥ श्रेवटघाटयंभीरजमंता
रानीकोनहीपंयचलै॥ वाचं·
सोचवटवारवनमे॥ कवनह
मेवलीकहै॥ फूटीमायामोह
परजन॥ झपताहेदीनचारको

ह्र॰ ईकस्मो भाषा॥ प्रभनाउकड
१२ कोईराषा॥ श्र जलाईउटीसं॥ ग॰
12 साथी॥ नवसां ऊपरीपेट॥ मा
नो॥ नवकमलसवेसमरकावे
श्रवनावकहांकोऊपावे॥ छ

सवरोह्मा। ह्रेसेंवीननीवद्रकी
ह्मा॥ कभुषोरोवद्रतकछ्ली
जै॥ त्रवपासवनकोकीजै॥
पकावालनीकरीचनराई। नी
ह्रेश्रीवटनावक्षीपाई॥ पकजा

ता·
१

गतछाछडलेभतोस्ततात्रष·
भानको॥ केसरापकोराजेमे
प्रभुतहारीतनकोजेपे॥ नेरके
परहडदउपजैऊःखपैतनकी
जीय॥ चोपाई॥ पककेयानले

पैहै॥ तबनंदहीपकरीमेंगैहै॥
नमेरेघबरवातहनीपैहै॥ ब
मकोकवनदेसपैरैहै॥ छंद॥
सदाजातपहैंपथमथुरा॥ रा
नहमैसेकौनलीयौ॥ दहीमां

दृ. कै॥कवंडुउ वहंदेसवाढै॥सव
९ खालतीउबीरीसाई॥प्रभका
प्रीतचलाई॥कछुमांगाद
10 हीवहलीजै॥प्रभदानकीपी
तनकीजै॥जवकेसमापेहनी

लागेहठनकोजैसुंदरी ॥ कंसः
तेहमउरनतनाहीसहनततवातस
वैरी ॥ चौपाई ॥ नद्दारवालसुः
घामिलवैरी ॥ ग्ररीकामठको
महतेरी ॥ कोहिहाण्यगारीउपका

दा ९ नचोरसभवनकोहै ॥ दोहा ॥ दे
षीलदेवीवारीग्वालनीकूं :
जवनकीवातहै ॥ लटीलेको
हैतेवेआभरनकेननमारे :
9 माथहै ॥ हिंसवनकोदान

गमोहै॥ मतमातीककंगातहो

लै। मधुरीकटीकिंकीतवोले

सीरवैनीगुथीवङूमोती॥

ताहोलागोरत्नकोपाती॥

कोतपाटपीतेवरपहे॥ की

हा
८
8

कितमोतीह्रमांणाविराजे ॥ कि
तपायतनेवरबाजे ॥ कितके
हारनकीमाला ॥ हीरामोती
गुथेहैलाला ॥ बाजूबंधकेरा
नवलमोहै ॥ नकबेसरीतेज

ईकै॥पराधीनबलहीनजोन
रकैसकेउरमोउरै॥दह्यौमोर
सकोनसछैदेख्योग्राभरनग्रा
पनो॥लालह्यौराजरनकेचन
मागमोतीग्रातिघनो॥चौपाई॥

दा ८ ता॥अबउग्रसेनैहैराजा॥अ
वहीहमनाहितौवाजा॥ह
मकोहठवादेतकीजे॥ह्ये
हातहमारोदीजे॥छंद॥जाके
वेदपुरानगावैमननमानैता

तुमतोतलोकमैदेखा॥ हमको १८
अनंतीमानषलेषा॥ हमहीसब
दैत्यसौंघारा॥ यहकाकैरैकेस
वौचारा॥ तुमकंसकोदारुण
माता॥ तेहीकालकेन्नपसमा

हा ९

इलेहजसद्दमसोलीजीपे ॥
नेदकोसहतजातोद्दमतेणरव
कवहूतकोजीपे ॥ चौपाई ॥ प
कुरवालतोकरीयेसवाता ॥
हसीवोलोजीभेवतनाथा ॥

6

इसीकेमनमोहनभायो॥छंद
तोतीलोकमैकवनजानैया
टनमहतातीरको।जानग्राव
नकुंजवनमैरहतलालग्र
हीरको॥लानदेव्रषभावला

दा
५

॥ ह्रीं वीं हुतनाई ॥ नमो गोकुल
कौ ब्रजनारी ॥ हम होब्रषभा·
नडलारी ॥ नमरी सौ वगोवस
भाए ॥ हम हैं जमनाघट वा·
ट ॥ कहुदान हमारो लागो ॥

हनीखालनीसवैमहकानी ||
हमग्राजमहनाह्रीदानी ||
हीपासमसैचालिग्राई || प
ह्रीचानलीयोजइराई || हम
|| कुवनकहासेग्राई || हमको

द्रा॰
४

कानकरझवीनती। अवहोहे
वाषसानके। धिदेहनीरवाल
पजारी॥ कलछाजीकहाबेली
दानदेझनीवारोआपनो॥ह
वीभलाञमरुभली॥ चौपाई॥

५

श्राप्ति॥ नह्यादेषोकुवककनाई॥प
कवालककहृतप्रकारो॥नो
ह्रोहृफननाह्रोरवारो॥छंदा॥
नोह्रोहृफननाह्रीरवारोप्रज
री॥ क्रस्नताकुरवाटको॥श्राप

द्रा
३

जमुनातटमारगलीह्यौ। ग्रा·
गोमोहनथैनुचरावै॥ वौंद्राव
नवैनुवजावै॥ जहांवाटसव
नकीसीर्ई॥ सवलीहनीग्रावै
दहोई॥ सववाटउपरवली·

3

नवनाथे॥ द्वारीगावहीदान

लीला॥ सुतडसजनकानदे॥

चौपाई॥ सवत्यारवारकीव्रजना॰

री॥ टघोगोरसवेचनहारी॥

मोलीजयमतासवकोह्ला॥

रा जमलोगोवहदेवकीग्रहवं

१ दकेबालकभये ॥ छपनको

टोजइवंसमाया ॥ जयगोपी

2 रवालको ॥ श्रीकृस्नकीसें·

गावछतवालका ॥ गाउचराव

तेतामसपतापे ॥ वसदेवहोरूप 15
हितारी ॥ जबगोकुलईछाकी
ह्रा ॥ वसदेवहोग्रापाहीह्रा ॥ त
ह्रानंदभवतपरूवापे ॥ तहा
नंदकोलालकहापे ॥ छंद ॥

द्रा.

रिंडा॥जाकेरोमकोटीब्रह्मं
डा॥जबमृगतब्रल्लकृहाप॥
मथुरासेवींद्रावनतयाई॥तहा
देवलोकमतिजेते॥सवगो
पीग्वालतेतेते॥देवकीह

ॐश्रीगणेशायनमः॥अथदानलीला
दोहा॥ॐचलोसखीउहांजाइये
जहांवसैव्रजराज॥गोरसवि
चतहरिमीलेएकपंथदोउका
ज॥चौपाई॥प्रथमदानव्रजलस्र॰